जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

चूरू

Rashtradoot

फोनः- 256906, 256907, फैक्सः- 01562-256908 | वर्षः 16 | संख्याः 72 | प्रभात | चूरू, मंगलवार 9 जुलाई, 2024 | पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21 | पृष्ठ 6 | मूल्य 2.50 रु.

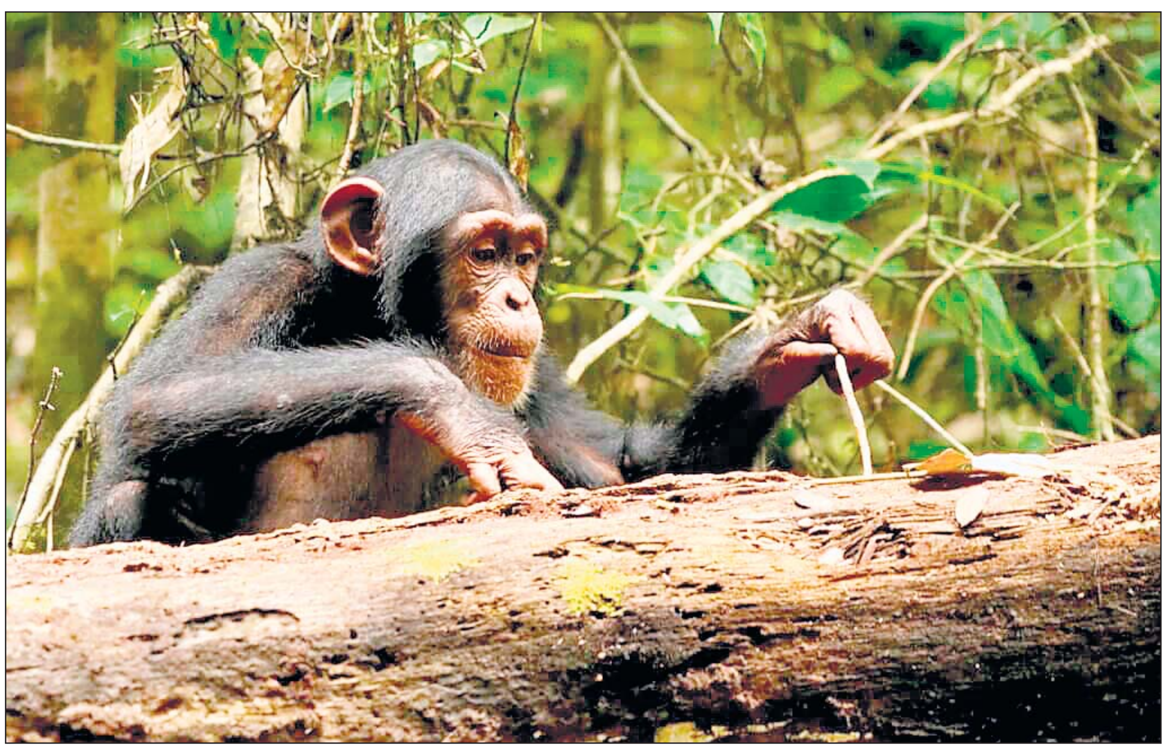

इंसान की तरह चिम्पैंज़ी भी ऐसे स्थानों से भोजन ढूंढने के लिए टूल्स का इस्तेमाल कर सकते हैं जहाँ पहुंचना कठिन होता है। पी.एल.ओ.एस बायॉलजी में छपे एक शोध के अनुसार, चिम्पैंज़ी में भी इंसानों की तरह सीखने की प्रक्रिया सतत चलती रहती है और वे इन क्षमताओं को वयस्क होने तक और बेहतर बना लेते हैं। फ्रांस की ''एप सोशल माइंड लैब'' के प्रमुख और मुख्य शोध लेखक मैथ्यू मैलेहब ने कहा कि, जंगल में, चिम्पैंज़ी के अस्तित्व के लिए सीखने की सतत प्रक्रिया और क्षमताओं का सतत विकास बेहद ज़रुरी है। जलवायु परिवर्तन के कारण भोजन की कमी होती जा रही है, ऐसे में डंडियों को ''टूल'' की तरह इस्तेमाल करके भोजन ढूंढना अतिआवश्यक हो जाता है। इंसान के बाद चिम्पैंज़ी का टूल किट बहुत ज्यादा विविधतापूर्ण होता है। मैथ्यू ने कहा, संरक्षण परियोजनाओं को इन प्रवृतियों को संरक्षित करने पर फोकस चाहिए क्योंकि इस प्रजाति के संरक्षण से हमारे उद्‌विकास इतिहास को समझने में भी मदद मिलेगी। मानव उद्‌विकास को समझने का प्रयास कर रहे शोधकर्ताओं ने चिन्हित किया है कि, टूल्स का इस्तेमाल करना मस्तिष्क के विकास का एक बड़ा कारक है। इसी तरह, इंसान में भी जीवन भर सीखते रहने की क्षमता का श्रेय विभिन्न प्रकार के टूल्स के इस्तेमाल को दिया जा सकता है। शोधकर्ताओं ने कहा कि, चिम्पैंज़ी ने टूल्स का इस्तेमाल कैसे सीखा, इस पर कई अध्ययन हुए हैं पर इन क्षमताओं का उत्तरोत्तर विकास कैसे होता है, इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया है। शोधकर्ताओं ने साढ़े सात साल तक 70 वैस्टर्न चिम्पैंज़ी के तीन समूहों को मॉनिटर किया और 1460 तरह से स्टिक (लकड़ी) के इस्तेमाल का विश्लेषण किया। उन्होंने देखा कि, चिम्पैंज़ी लकड़ी का इस्तेमाल कैसे करते हैं, यह उनके भोजन पर निर्भर करता है। उन्होंने देखा कि, उम्रदराज चिम्पैंज़ी टूल्स के इस्तेमाल में ज्यादा माहिर थे। शोधकर्ताओं का निष्कर्ष है कि, चिम्पैंज़ी को यह महारथ हासिल करने के लिए सीखने की लम्बी प्रक्रिया से गुजरना आवश्यक है।

कश्मीर में आतंकियों का भारतीय सैन्य दल पर हमला, 5 जवान शहीद

जम्मू-कश्मीर के कठुआ जिले में हुई इस घटना में पांच अन्य जवान गंभीर रूप से घायल हुए है

- घटना कठुआ के माचेड़ी इलाके की है। सेना और आतंकियों के बीच मुठभेड़ जारी है।
- सेना की ओर से क्षेत्र में सर्च ऑपरेशन चलाया गया है।
- दो दिन पहले कुलगाम में भी आतंकवादियों व सेना के बीच मुठभेड़ हुई थी, जिसमें 8 आतंकी मारे गए थे तथा दो जवान शहीद हुए थे।
- रविवार को राजौरी में भी आतंकियों ने एक गांव की सुरक्षा चौकी पर हमला किया था जिसमें एक जवान घायल हो गया।

श्रीनगर, 8 जुलाई। जम्मू-कश्मीर के कठुआ जिले में आतंकियों ने भारतीय सेना के काफिले पर सोमवार को अचानक हमला कर दिया। दहशतगर्दों की फायरिंग के बाद भारतीय जवानों ने भी जवाबी कार्रवाई की। दोनों ओर से फायरिंग में सेना के 5 जवान शहीद हो गए और 5 घायल भी हैं। यह घटना जिले के माचेड़ी इलाके में हुई। बताया जा रहा है कि यह क्षेत्र इंडियन आर्मी की 9 कोर के तहत आता है। खबर लिखे जाने तक दोनों ओर से गोलीबारी का सिलसिला जारी था। साथ ही, बड़े पैमाने पर सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है।

रिपोर्ट के मुताबिक, आतंकवादियों ने सेना के वाहनों को निशाना बनाकर एक ग्रेनेड फेंका और गोलीबारी की। ये वाहन कठुआ शहर से 150 किलोमीटर दूर लोहई मल्हार में बदनोता गांव के पास दोपहर करीब साढ़े 3 बजे माचेडी-किंडली-मल्हार मार्ग पर नियमित गश्त पर थे।

गौरतलब है कि दो दिन पहले ही कुलगाम जिले में आतंकवादियों और जवानों के बीच 2 मुठभेड़ें हुई थीं। इस दौरान कुल मिलाकर 8 आतंकी मारे गए। मोदेरगाम और चिन्निगम गांवों में हुई मुठभेड़ों में एलीट पैरा यूनिट के लांस नायक प्रदीप कुमार और राष्ट्रीय राइफल्स बटालियन के सिपाही प्रवीण जंजाल प्रभाकर शहीद हो गए थे। जम्मू-कश्मीर के पुलिस महानिदेशक आरआर स्वैन ने कहा कि आतंकवादियों का मारा जाना सुरक्षा बलों के लिए बड़ा मील का पत्थर है, क्योंकि इससे सुरक्षा माहौल मजबूत होगा। ये सफल ऑपरेशन सुरक्षा को मजबूत करने के लिए बहुत सार्थक हैं। ये ऑपरेशन यह संदेश भी देते हैं कि लोग आतंकवाद के कारण और अधिक खून खराबा नहीं चाहते हैं।

रविवार को राजौरी जिले के एक गांव में सुरक्षा चौकी पर आतंकवादियों ने गोलीबारी कर दी थी। इसमें सेना का एक जवान घायल हो गया। अधिकारियों ने बताया कि आतंकवादियों ने तड़के करीब 4 बजे मंजाकोट क्षेत्र के गलुथी गांव में सेना की चौकी पर गोलीबारी की, जिसके बाद जवानों ने भी जवाबी कार्रवाई की। उन्होंने बताया कि दहशतगर्दों और जवानों के बीच करीब आधे घंटे तक फायरिंग हुई, जिसमें सेना का एक जवान घायल हो गया। मगर, आतंकवादी निकट के जंगल में भाग गए। आतंकवादियों की तलाश के लिए बड़े पैमाने पर सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है।

कुछ दिनों पहले कठुआ जिले में अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास गांव में एक व्यक्ति ने अपनी खेत के नीचे सीमा पार सुरंग होने का संदेह जताया था, जिसके बाद सुरक्षाकर्मियों ने तलाशी अभियान चलाया। अधिकारियों ने बताया कि सीमा सुरक्षा बल के जवान स्थानीय पुलिस के साथ मिलकर मौके पर खुदाई कर रहे हैं ताकि यह पता लगाया जा सके कि सुरंग मौजूद है या नहीं। हीरानगर बेल्ट के थांगली गांव के किसान ने देखा कि उसके खेत में आने वाला पानी एक छोटी सी खाई में जा रहा है। उसे लगा कि यह सीमा पार की सुरंग हो सकती है। ग्रामीण ने बताया कि उसने पुलिस और बीएसएफ को इसकी सूचना दी, जिसके बाद पुलिस बुलडोजर लेकर मौके पर पहुंची और व्यापक खुदाई की, लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला।

अन्नाद्रमुक के पुराने नेता व कार्यकर्ता दुखी हैं, पार्टी के डूबते भाग्य से

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- इन नेताओं की शिकायत है, जयललिता के समय अन्नाद्रमुक लोकसभा में तीसरी सबसे बड़ी पार्टी थी, पर, अब बाय इलैक्शन लड़ने से बच रही है।
- जैसा कि विदित है, डी.एम.के. विधायक की मृत्यु के कारण विक्रवण्डी सीट पर उपचुनाव होंगे।
- पर अन्नाद्रमुक ने उपचुनाव में भाग न लेने की घोषणा की है।
- क्या यह निर्णय भाजपा को परोक्ष रूप से मदद करने के लिये लिया गया है तथा अन्नाद्रमुक के नेताओं को भय भी था कि वैसे ही उसके कार्यकर्ता, लोकसभा चुनाव की भांति, द्रमुक को समर्थन देने के मूड में नहीं हैं।

नई दिल्ली, 8 जुलाई। तमिलनाडु में एक बहुत ही मजेदार उपचुनाव होने जा रहा है जिसमें प्रमुख विपक्षी दल अन्नाद्रमुक भाग नहीं लेने वाली है इससे इन अटकलों को बल मिला है कि क्या भाजपा को खुली छूट देना एक विवेकपूर्ण कदम था और क्या यह द्रमुक के लिए भी बुद्धिमत्तापूर्ण था।

द्रमुक के वर्तमान विधायक की मृत्यु हो जाने के कारण विधानसभा की विक्रावंडी सीट रिक्त हो चुकी है और सत्ताधारी पार्टी को विधानसभा में प्रचंड बहुमत प्राप्त है, इसलिए उसका यह मानना है कि इस सीट पर बिना किसी बाधा के वह अपना कब्जा बनाए रखने में कामयाब होगी। जैसा कि तमिलनाडु में होता रहा है, सत्ता पर काबिज पार्टी अधिकांशतया हमेशा उपचुनाव जीतती रही है।

यहां तक कि लोकसभा चुनावों के दौरान यह देखा गया था कि अन्नाद्रमुक के समर्थकों ने भाजपा के नेतृत्व वाले एन.डी.ए. को अन्य विपक्षी वोट देने के बजाए द्रमुक को वोट दिया था और अब इसको लेकर अटकलें तेज हो गई है कि क्या अन्नाद्रमुक के समर्थक मतदाता अब होने वाले उपचुनावों में भी वैसा ही रुख अपनाएंगे। द्रमुक नेताओं को पक्का भरोसा है कि वे निश्चितरुप से सत्ताधारी दल को ही वोट देंगे, द्रमुक के एक वरिष्ठ मंत्री के. पोन्मुदि ने पार्टी कार्यकर्ताओं से कहा था कि इस बार भी चुनावों में अन्नाद्रमुक के समर्थक मतदाता द्रमुक पार्टी को वोट देंगे।

अन्नाद्रमुक के पूर्व मंत्री व वरिष्ठ नेता डी. जयकुमार ने द्रमुक मंत्री की आशावादी सोच से भिन्न मत प्रकट किया और कहा कि अन्नाद्रमुक वोटर्स उनकी पार्टी की अपील अनुसार वोट करेंगे और द्रमुक को वोट देने के बजाए वे चुनावों का बहिष्कार करना ज्यादा पसंद करेंगे।

इस मामले में रोचक सवाल यह है कि अन्नाद्रमुक पार्टी चुनावी मैदान से बाहर क्यों हो गई।

तमिलनाडु में अटकलों का बाजार गर्म है कि अन्नाद्रमुक पार्टी भाजपा की मदद करने के लिए चुनावी मैदान से बाहर हुई है।

असल में, क्षेत्रीय संगठन के एक नेता, द्रविडार कज़गम (डी.के.) के अध्यक्ष के. वीरामणि ने कहा था कि अन्नाद्रमुक चुनावों का बहिष्कार करेगी तो उससे अप्रत्यक्ष रुप से भाजपा गठबंधन को लाभ होगा।

अभी कुछ समय पूर्व खत्म हुए लोकसभा चुनावों में यहां तक देखा गया था कि अन्नाद्रमुक ने भाजपा की आलोचना नहीं की थी।

लोकसभा चुनाव 2019 का हो या वर्ष 2024 का, अन्नाद्रमुक एक भी सीट जीतने में कामयाब नहीं हुई है।

विक्रवांडी निर्वाचन क्षेत्र में द्रमुक तथा पी.एम.के., जो कि भाजपा गठबंधन की पार्टी है, दोनों उपचुनाव लड़ रहे हैं और आगामी चुनावी युद्ध के लिए गहन चुनाव प्रचार अभियान प्रारंभ कर चुके हैं। गठबंधन का दूसरा सहयोगी दल टी.टी.वी. दिनकरन ने अन्नाद्रमुक पर निशाना साधते हुए कहा कि उसे चुनावों में पराजित होने का डर था, इसलिए अन्नाद्रमुक ने मजबूरन उपचुनाव नहीं लड़ने का निर्णय किया।

उनकी रिश्तेदार व जयललिता की खास भरोसेमंद शशिकला ने अन्नाद्रमुक के अध्यक्ष एडापड्डी पलानीस्वामी की कटु आलोचना की ओर कहा कि पार्टी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राहुल गांधी मणिपुर दौरे पर

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 जुलाई। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी मणिपुर पहुँच गये तथा जिरिबाम एवं चारचाँदपुर जिलों में स्थित राहत शिविरों में जाकर वहाँ रहने वाले लोगों से बातचीत की तथा उनके प्रति सहानुभूति व्यक्त की। मणिपुर में मई, 2023 में शुरू हुई इस

- मणिपुर में हिंसा होने के बाद से राहुल गांधी की यह तीसरी मणिपुर यात्रा है। गांधी ने राहत शिविरों में रह रहे विस्थापितों से मुलाकात की।

नस्ली हिंसा के बाद यह तीसरा अवसर है, जब राहुल गांधी मणिपुर गये हैं।

इस पूर्वोत्तर राज्य में फैली नस्ली हिंसा के कारण विस्थापित हुए लोग गत वर्ष से इन राहत शिविरों में रह रहे हैं। इस हिंसा में अब तक 200 से अधिक लोग मारे जा चुके हैं।

राज्य की दोनों लोकसभा सीटें जीतने के बाद, राहुल गांधी पहली बार मणिपुर गए हैं। उनके साथ पार्टी के कई

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ज्योतिर्मठ के शंकराचार्य राहुल गांधी के पक्ष में मुखरित हुए

शंकराचार्य ने कहा, राहुल द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव पर संसद में दिये भाषण को टुकड़ों में उद्‌धृत करना व प्रचारित करना गलत व अनैतिक है

- डॉ. सतीश मीश्रा -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- शंकराचार्य के अनुसार राहुल गांधी ने सारे हिन्दू धर्मालम्बियों को कभी हिंसा फैलाने वाला नहीं बताया, उन्होंने भाजपा को हिंसा फैलाने वाला हिन्दुओं का ''ग्रुप'' बताया था।

नई दिल्ली, 8 जुलाई। राहुल गांधी द्वारा लोकसभा में दिये उस आक्रामक एवं चर्चित भाषण के कई दिनों बाद, ज्योति मठ के छियालिसवें शंकराचार्य कांग्रेस नेता के समर्थन में आगे आ गए हैं।

यह विवाद राष्ट्रपति के अभिभाषण के लिये प्रस्तुत धन्यवाद प्रस्ताव के दौरान उस समय पैदा हुआ, जब राहुल गांधी ने भाजपा नेताओं पर जनता को साम्प्रदायिक आधार पर बाँटने का आरोप लगाया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राहुल के भाषण की भर्त्सना की तथा कहा कि कांग्रेस नेता ने ''पूरे हिन्दू समाज को हिंसक'' बताया है। इस आरोप ने से संसद में तू-तू मैं-मैं की स्थिति ला दी जिसके कारण लोकसभा अध्यक्ष को रिकॉर्ड से बहुत से विवादास्पद बयान हटाने पड़े।

आर.एस.एस. और उससे सम्बद्ध बहुत से संगठन, जिनमें भाजपा और बजरंग दल भी शामिल हैं, राहुल द्वारा लोकसभा में बोले गये शब्दों को तोड़ने-मरोड़ने की कोशिश कर रहे हैं जिससे जनता के दिलो-दिमाग में कांग्रेस की नकारात्मक छवि बिठाई जा सके।

शंकराचार्य, जो हिन्दुओं की बहुत सम्मानित हस्ती हैं, ने एक भिन्न नजरिया प्रस्तुत किया है। शंकराचार्य ने रविवार को कहा, ''हमने राहुल गांधी के पूरे भाषण को बहुत ध्यान से सुना। (राहुल) स्पष्ट शब्दों में जोर देते हुये कहते हैं कि हिन्दुत्व हिंसा को खारिज करता है।''

सोशल मीडिया पर वायरल हो चुके एक वीडियो में धर्मगुरू ने इस बात की आलोचना की कि गांधी के भाषण के चयनित हिस्सों को प्रचारित-प्रसारित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि तथ्यों को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि तथ्यों को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत करने वालों की जवाबदेही तय होनी चाहिए। शंकराचार्य ने कहा, ''गांधी के बयान के केवल चयनित हिस्सों को प्रस्तुत करना भ्रामक, गुमराह करने वाला तथा अनैतिक है।'' उन्होंने कहा कि इस कृत्य के जिम्मेदार लोगों को सजा मिलनी चाहिए।

कांग्रेस सांसद तथा राहुल गांधी की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

प्रदेश के 13 जिलों में बारिश का यलो अलर्ट

जयपुर, 8 जुलाई। राजस्थान में मानसून की एंट्री के बाद से लगातार बारिश का दौर जारी है। बारिश के चलते कई जिलों में नदी नाले उफान पर है। वहीं, वर्षाजनित हादसों में कई लोगों की मौत हो चुकी है। राजधानी जयपुर सहित

- बीते 24 घंटे में सर्वाधिक बारिश पश्चिमी राजस्थान के तारानगर, चूरू में 141 मिलीमीटर तथा करौली में 137 मिलीमीटर दर्ज की गई है।

कई जगह आज सुबह बारिश हुई। मौसम विभाग ने आज प्रदेश के 13 जिलों में बारिश का येलो अलर्ट जारी किया है। हालांकि, मानसून आने के बाद लगातार चल रहा भारी बारिश का दौर आज थम जाएगा। लेकिन, 10 जुलाई से फिर तेज बारिश का दौर शुरू होगा।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भारत में आधी वयस्क जनता हार्ट-अटैक व लकवे की छाया में जी रही है

इतनी बड़ी संख्या में हार्ट अटैक व पक्षाघात के रिस्क का कारण लैन्सैट ग्लोबल हैल्थ ग्रुप व डब्ल्यु.एच.ओ. के अनुसार, जनसंख्या में फिज़िकल एक्टिविटी (शारीरिक गतिविधि का अभाव है)

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- विश्व में 30 प्रतिशत जनता में ''फिज़िकल एक्टिविटी'' का अभाव है, पर, भारत में यह आंकड़ा 49.4 प्रतिशत है और अगर वर्तमान हालात में परिवर्तन नहीं हुआ तो यह आंकड़ा 59.9 प्रतिशत तक पहुंच जायेगा 2030 तक।
- वर्ल्ड बैंक के अनुसार, पर्याप्त फिज़िकल एक्टिविटी न होने से हार्ट अटैक व लकवे के अलावा टाइप 2 डायबिटीज़, डिमैन्शिया, कई तरह के कैन्सर की बीमारी होने की संभावना बहुत बढ़ जाती है।
- डब्ल्यु.एच.ओ. के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र से अच्छे करिअर व लाइफ स्टाइल की तलाश में युवा शहर आते हैं। पर, करिअर की दौड़ में इन युवाओं की जिंदगी काम की जिम्मेवारी तक सीमित हो जाती है और काम के लिये आवागमन व वर्क कमिटमैंट के रूटीन में फंस जाती है, जिसमें थोड़ी ''सोशलाइजिंग'' वीक एण्ड को ही संभव होती है। इस लाइफ-स्टाइल में ''फिज़िकल एक्टिविटी बहुत कम हो जाती है तथा इसका नतीजा होता है गंभीर बीमारियाँ।

नई दिल्ली, 8 जुलाई। द लैंसेट ग्लोबल हैल्थ ने शारीरिक निष्क्रियता के कारण भारत के वयस्क लोगों के गिरते स्वास्थ्य को लेकर चेतावनी जारी की है। इस विषय की गंभीरता का अंदाजा वर्ष 2022 के डेटा से लगाया जा सकता है, जिसमें यह बताया गया है कि भारत के सभी वयस्क फिज़िकल एक्टीविटी के तय मापदण्डों को पूर्ण करने में विफल रहे।

स्वास्थ्य का मामला चिंताजनक है। इन वयस्कों में हार्ट अटैक व स्ट्रोक सहित दिल की बीमारियों, टाइप 2 डायबिटीज़, डिमैन्शिया, स्तन व आंतों को प्रभावित करने वाले विभिन्न कैंसर्स जैसी बीमारियाँ बढ़ने का अंदेशा है।

दुनिया की सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्था एवं सबसे अधिक आबादी वाले भारत में श्रमिकों की भारी संख्या है, जिसमें वयस्कों और युवाओं की बहुतायत है। इनमें से कई युवा जीवन के अच्छे अवसरों की तलाश में शहरों का रूख करते हैं।

तथापि, करियर बनाने के उत्साह और उससे जुड़े दबावों ने रोजमर्रा के जीवन को उबाऊ बना दिया है, क्योंकि इसमें काम की प्रतिबद्धताएं, नियमित आना-जाना, सप्ताहांत में कभी-कभी लोगों से मिलना और फिर पुनः अपने काम पर लगने का चक्र चलता रहता है। इस लाइफ स्टाइल गिफ्ट के कारण शारीरिक गतिविधि के स्तर में उल्लेखनीय कमी आई है और इसके कारण कामगारों में पोषण की खराब आदतों में इजाफा हुआ है।

वर्ल्ड हैल्थ ऑर्गनाइज़ेशन (डब्ल्यू.एच.ओ.) में डायरैक्टर ऑफ हैल्थ प्रमोशन डॉ. रूडिगर क्रैच चेतावनी देते हैं कि शारीरिक निष्क्रियता ग्लोबल हैल्थ के लिए एक मौन, किन्तु वास्तविक खतरा प्रस्तुत करती है। वह अधिक सक्रिय जीवन शैलियां अपनाने को लेकर विभिन्न आयु समूहों, पर्यावरणों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के लोगों को प्रेरित करने के लिए

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

संविदा कर्मी को हटाया, हाई कोर्ट ने रोक लगाई

जयपुर, 8 जुलाई (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने पंचायती राज विभाग के अधीन संविदा पर कार्यरत

- पंचायती राज विभाग में एक संविदा कर्मी को हटाकर दूसरे संविदा कर्मी की नियुक्ति को हटाए गए संविदाकर्मी ने अदालत में चुनौती दी और कहा कि संविदा कर्मी को तभी हटाया जा सकता है जब उसके स्थान पर नियमित भर्ती की जाए।

ब्लॉक समन्वयक को हटाकर उसके स्थान पर दूसरे संविदा कर्मी को लगाने पर अंतरिम रोक लगा दी है। इसके साथ

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)